प्रथम
(1) II std

नज़रिया. . .

खाने की मेजपर रखे चाय के प्याले से उठती हुई भाप और मन में उमड़ता विचारों का गुबार, सब जैसे एकाकार हो रहा था। अभी 10 मिनट पहले तक सब ठीक था, पर बडी बहन के फोन ने हृदय को सोचने पर विवश कर दिया। फोन पर उमादीदी का बार बार कहना कि मैंने तो बहू को बेटी ही माना है तो फिर उसने मुझे बातें क्यों सुनाई ? सुनने मे तो ये हर घर में होनेवाली बात है, पर मेरा मन इस तर्क वितर्क में फँसा है कि हमारी बहू बेटी की तरह क्यों ? बहू को बहू के रूप में प्रेम नहीं दिया जा सकता ? क्या हम बार बार बहू को बेटी की तरह मानने की बात कहकर अपने किसी अपराध बोध को छिपा तो नहीं रहे हैं ? या फिर यही बदलते युग की नई परिभाषा है ?

मन उद्वेलित हो रहा था। आये दिन सास-बहुओं की कहासुनी के बीच, मैंने मान लिया था कि दीदी का अपनी बहू के साथ अच्छा निभेगा। पर आज की यह घटना.... ? दीदी ने बताया था कि 'शिवानी ऑफिस से आयी तो देखा कि ना रसोई हुई है ना बर्तन! कामवाली आयी नहीं तो पूरे काम ऐसे ही पडे हैं। तो उसका माथा ठनका। शिवानी ने बर्तन तो माँजे पर सुना भी दिया - 'आपको तो कोई अनपढ़, गँवार बहू लानी चाहिये थी जो घर का पूरा काम करें।' रवि ने बीच में टोका - 'जरा संभल के बोला करो! वो तुम्हारी माँ जैसी है।' तो और भड़क गयी - बोली - 'माँ होती तो मेरे आनेतक पूरा काम हो गया होता। शादी से पहले सब होता ही था नं यहाँ ? अब क्या हो गया है ? बेटी बेटी कहने से कोई बेटी नहीं बन जाती। पहले इतनी पढाई करो, फिर शादी में इतना खर्च करो, फिर यहाँ आकर भी नौकरानी जैसे काम करो। बेटी का दर्द आप क्या जानो ? मानने और होने में अंतर होता है। बहू को तो आप धन, शिक्षा, रूप के तराजू में तौल के वस्तु की तरह परख के लाते हैं। पर बहू के कर्तव्य क्या हैं ये आपको पूरा याद रहता है और काम करो तो गलतियाँ निकालते रहते हो। बेटी जायी होती है बहू परायी।'.... पूरी बातें सिलसिलेवार बताना दीदी की आदत थी। फिर रूआँसी होकर - 'मैं ने तो उसे बेटी ही. . . .'

मेज पर पड़ी चाय ठंडी हो गई, पर मेरा मन उबल रहा था। कहाँ गलती होती है ? क्यों मानते बहू को बेटी ? क्या बहू का अपना कोई विशेष अस्तित्व नहीं ? गृहलक्ष्मी होते हुए भी बेटी के समान मानकर हम अपने अपराधबोध का तुष्टीकरण तो नहीं कर रहे ?

दीदी ने शिवानी को बेटी की तरह मानकर सीखाने की, टोकने की कोशिश की होगी। 25-26 वर्ष किसी अलग संस्कारों में पली संगणक अभियंता शिवानी घर का काम जानती है यही क्या कम है ? रवि क्यों नहीं कर सकता घर के कुछ काम ? शिवानी का गुस्सा जायज है। हाँ, उसे रवि को समझाना चाहिये था! फिर बहू ने गुस्से में कुछ बोल भी दिया तो दीदी ने मुझे क्यों बताया ? बेटी ने गुस्सा किया होता तो बताती क्या ?

कामवाली चंदाबाई आ गई। खुश थी। बोली - 'आज बहू ने मेरे लिये फोन लाया अपनी पगार से।' मैंने कहा - 'वाह! पैसेवाली है क्या ? तुम भी तो बेटी जैसी ही रखती हो ना ?' बोली - 'ना - ना! बेटी तो नौवे महीने दिख जाती है। बहू के लिए 20-25 बरस तरसना पड़ता है। बहू तो बेटी से बहुत बढ़कर है। उसके माँ बाप ने इतने बरस खस्ता खाके उसे अपनी झोली में डाला है। मैं तो उसे काँच के बर्तन की तरह संभालती हूँ। वो गरीब है तो क्या, बहुत प्यार करती हूँ उसे।'

मेरे मस्तिष्क में बिजली कौंध गई। चंदाबाई ने जीवन का कितना बड़ा सत्य उद्घोषित कर दिया। न अपराध बोध हो, न परिभाषा बदले। बस् संबंधों की वास्तविकता स्वीकार कर लें। आवश्यकता है तो चंदाबाई जैसे नजरिये की। निरपेक्ष प्यार लुटाने की।

कल ही दीदी और रवि को समझाने की कोशिश करूँगी।

- पुष्पा बल्दवा
ठाणे शहर, जि. थाना